Sign in to edit and save changes to this file.

शाश्वत टाइम्स
हिन्दी दैनिक

सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाएं किसानः डॉ खलील खान

शाश्वत टाइम्स कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के वैज्ञानिक डॉ खलील खान एवं फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने संयुक्त रुप से सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है। डॉ खान ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनो, पत्तियों, फूलों एवं नई फलियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं।

उन्होंने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.03ब घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में 2ब नीम के तेल को तरल साबुन के साथ(20 मिलीलीटर नीम का तेल + 1 मिलीलीटर तरल साबुन) में मिलाकर छिड़काव करें। डॉक्टर अजय कुमार सिंह ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं। जो बाद में तेजी से बढ़ कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं।उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं। यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाईथेन एम-45 का 0.2ब घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें। डॉ खलील खान ने किसानों से अपील की है कि वे अपनी सरसों की फसल की निगरानी अवश्य करते रहें। फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंधन करें। जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexp
WORLD खबर EXPRESS
रविवार, 16-01-2022 अंक-16
www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com
WORLD
खबर एक्सप्रेस
MID DAY E-PAPER

सरसों को कीड़ों से बचाएं किसान

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के वैज्ञानिक डॉ. खलील खान एवं फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ. अजय कुमार सिंह ने सरसों फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाव के लिए एडवाइजरी जारी की है। डॉ. खान ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूलों एवं नई फलियों से रस चूसकर कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। उन्होंने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या जैविक नियंत्रण हेतु फसल में 2 प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन के साथ (20 मिलीलीटर नीम का तेल + 1 मिलीलीटर तरल साबुन) में मिलाकर छिड़काव करें। डॉ. अजय कुमार सिंह ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं, जो बाद में तेजी से बढ़कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरूप पत्तियां सूखकर गिर जाती हैं। यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाईथेन एम-45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें। डॉ. खलील खान ने किसानों से अपील की है कि वे अपनी सरसों की फसल की निगरानी अवश्य करते रहें। फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंधन करें, जिससे फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

भाज
हानगर
कानपुर
17 जनवरी 2022 4

सरसों की फसल को रोग एवं कीड़ों से बचाएं किसान

- फसलों में २ प्रतिशत नीम के तेल व तरल साबुन क्लोप्रिड का घोल का छिड़काव करें किसान

कानपुर, 16 जनवरी। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के वैज्ञानिक डॉ खलील खान एवं फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने संयुक्त रुप से सरसों फसल के रोग एवं कीड़ों से बचाव हेतु किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में सरसों का विशेष स्थान है। कृषि वैज्ञानिक ने कहा कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। इस कीट के शिशु का पौधों के कोमल तनो, पत्तियों, फूलों एवं नई फलियों से रस चूस कर उसे कमजोर एवं क्षतिग्रस्त करते हैं। उन्होंने बताया कि आसमान में बादल घिरे रहने से इसका प्रकोप तेजी से होता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या फिर जैविक नियंत्रण हेतु फसल में 2 प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन के साथ(20 मिलीलीटर नीम का तेल + 1 मिलीलीटर तरल साबुन) में मिलाकर छिड़काव करें। डॉ अजय कुमार सिंह ने रोगों के बारे में बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। यह सरसों की पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे गोल धब्बे बनते हैं। जो बाद में तेजी से बढ़ कर काले और बड़े आकार के हो जाते हैं।उन्होंने बताया कि रोग की अधिकता में बहुत से धब्बे आपस में मिलकर बड़ा रूप ले लेते हैं। फल स्वरुप पत्तियां सूख कर गिर जाती हैं। यह लक्षण फसल में दिखाई देते ही डाईथेन एम-45 का 0.2 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें। सीएसए के कृषि वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसानों से अपील की है कि वे अपनी सरसों की फसल की निगरानी अवश्य करते रहें। फसल पर रोग या कीट आने पर प्रबंधन करें, ताकि फसल को कीट और रोगों से बचाया जा सके।

दैनिक जागरण कानपुर 17/01/2022

सरसों की फसल को रोग से बचाएं : डा. खलील

जाजमऊ, कानपुर : मौसम की मौजूदा परिस्थितियों में सरसों की फसल पर रोग और कीटों का हमला बढ़ जाता है। माहू कीट या चेपा की आशंका बनी रहती है। इस कीट के शिशु पौधों के कोमल तनों, पत्तियों, फूलों व नई फलियों से रस चूसकर उसे कमजोर कर देते हैं। आसमान में बादल होने पर इनका प्रकोप बढ़ता है। ऐसे में सरसों की फसल को रोग और कीड़ों से बचाने के लिए सीएसए विवि के अधीन कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के वैज्ञानिक डा. खलील खान व फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डा. अजय कुमार सिंह ने किसानों को विशेष सलाह दी है।

ऐसे करें बचाव: कीट के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 0.03 प्रतिशत घोल या दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन के साथ मिलाकर छिड़काव करें। डा. अजय ने बताया कि सरसों की फसल में काला धब्बा रोग भी लगता है। लक्षण दिखने पर डाईथेन एम-45 का 0.2 प्रतिशत घोल बनाकर 15 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।

अमर उजाला कानपुर 17/01/2022

सरसों को रोगों और कीड़ों से बचाएं

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के वैज्ञानिक डॉ. खलील खान और फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ. अजय कुमार सिंह ने सरसों की फसल को रोगों एवं कीड़ों से बचाने के लिए एडवाइजरी जारी की। डॉ. खान ने बताया कि इस समय माहू कीट या चेपा का प्रमुखता से सरसों की फसल में आक्रमण होता है। कीट पौधों के तनों, पत्तियों, फूलों और नई फलियों का रस चूस कर उसे कमजोर और क्षतिग्रस्त कर देते हैं। नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड के 0.03 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। फसल में दो प्रतिशत नीम के तेल को तरल साबुन के साथ (20 मिलीलीटर नीम का तेल में 1 मिलीलीटर तरल साबुन) मिलाकर छिड़काव करें। काला धब्बा रोग से बचाव के लिए डाईथेन एम-45 के 0.2 प्रतिशत घोल का 15 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें। (संवाद)